मानसिक विकलांग बालक (Mentally Retarded or Handicapped Children)

मानसिक मंद बालक-ऐसे बच्चे जो सामान्य से कम शिक्षा उपलब्धि रखते हैं मानसिक मंद कहे जा सकते हैं या ऐसे बच्चे जिनकी विद्यालय की उपलब्धियां अर्थात विद्यालय में किसी भी क्षेत्र में सफलता साबित नहीं कर पाए हैं। या ऐसे बच्चे जो शिक्षा के क्षेत्र में तो असफल है और दूसरे क्षेत्रों में सफल है इनमें से मानसिक मंद बालक की श्रेणी में कौन से बालक आएंगे।

मानस मंदता या मंदबुद्धि का अर्थ-

मानस मंदता का अर्थ है"औसत से कम मानसिक योग्यता।"

मंदबुद्धि बच्चों की बुद्धि लब्धि सामान्य बच्चों की बुद्धि लब्धि से कम होती है। इसी कारण इन मानसिक मंद बच्चों में तमाम मानसिक शक्तियां कम होती है । या कम विकसित होती है अथवा शैक्षिक दृष्टि से मंदबुद्धि बालक से मतलब ऐसे बच्चों से है। जिसमें सूझ ,तर्कशक्ति ,अवधान केंद्रित करने की क्षमता सामान्य बच्चों से कम हो । दूसरे शब्दों में जब बच्चों की शारीरिक आयु बढ़ती है पर बौद्धिक विकास नहीं हो पाता है । तो उम्र बढ़ने पर भी यह बच्चे छोटी उम्र के बच्चों के समान ही हो जाते हैं यही स्थिति मानसिक मंदता कहलाती है।

"मानस मंदता का अर्थ है छतिग्रस्त या अपूर्ण मानसिक विकास।

मंदबुद्धि बच्चों से तात्पर्य से माना गया है कि मूलता ऐसे बच्चे दो प्रकार के होते हैं।

1-मंदित मना बालक

2-धीमी गति से सीखने वाले बालक

मंदित मना बालक की बुद्धि लब्धि 60 से कम होती है।

धीमी गति से सीखने वाले बालक की बुद्धि लब्धि औसत बुद्धि लब्धि से भी कम होती है।

धीमी गति से सीखने वाले बच्चों के लिए सुझाव-

1-इस बात का लेखा रखा जाए कि जो काम उनको दिया गया है उसको उन्होंने पूरा कर लिया है या नहीं और उनकी प्रगति हो रही है या नहीं।

2-जो धीमी गति से सीखते हैं उनको वैसी स्थिति में ना रखा जाए जहां उनमें विफलता की भावना पैदा हो और उनको वही कार्य करने के लिए दिया जाए जिनकी यह योग्यता रखते हो।

3-ऐसे बच्चों में आत्म प्रतिष्ठा की भावना पैदा की जाए इनमें आत्मविश्वास पैदा किया जाए।

4-इनको सीखने के लिए साधारण काम दिया जाए ऐसे काम इनको सीखने के लिए ना दिए जाए जिसमें तमाम पद हो।

5-पाठ को बार-बार दोहराया जाए इससे पाठ अच्छी तरह से याद हो जाएगा।

मानस मंदता की अवधारणा और मानसिक तौर पर पिछले बालकों का वर्गीकरण-

अवधारणा-मानसिक मंदता इस तरह का प्रत्यय है जिस की परिभाषा करना आसान नहीं है। वैसे तो मानस मंदता की तमाम परिभाषाएं दी गई है पर जो सबसे ज्यादा प्रचलित और स्वीकृत है वह मानस मंदता को सामान्य से कम बौद्धिक क्षमता के रूप में परिभाषित करता है।

वर्गीकरण प्रथम-

<u>मानसिक तौर पर पिछड़े बालकों की पहचान-</u>

1-व्यक्तिकृत अध्ययन की सहायता से पहचान हो सकती है।

2-शैक्षिक निष्पत्ति के आधार पर पहचान हो सकती है।

3-शैक्षिक और शारीरिक आलेख पत्र की मदद से पहचान हो सकती है।

4-ऐसे बच्चे प्राया शारीरिक तौर पर अयोग्य होते हैं।

5-बुद्धि लब्धि द्वारा भी पहचान हो सकती है।

6-यह बच्चे संवेगात्मक तौर पर स्थिर होते हैं।

<u>मानसिक पिछड़ेपन के आधार</u>-

1-शैक्षिक आधार

2-सामाजिक आधार

3-व्यवहारिक आधार

<u>वर्गीकरण द्वितीय-</u>

जितनी भी मानस मंदता की परिभाषा बताई गई है उन सभी को इन दो मुख्य वर्गों के अंतर्गत रखकर अध्ययन किया जा सकता है।

1-मानस मंदता निम्न बौद्धिक क्षमता के रूप में।

2-मानस मंदता का सामाजिक असमर्थ के रूप में

<u>मानस मंद बालकों की विशेषताएं</u>-

1-सीमित प्रेरणा और संवेग

2- कुसमायोजन की स्थिति

3-अनियंत्रित मानसिक क्रियाएं

4-हीन व्यक्तित्व

5- आसामान्य शारीरिक रचना

6-आर्थो पाजन योग्य नहीं

7-बौद्धिक न्यूनता

8-शैक्षिक पिछड़ापन